

डॉ. कलाम के जन्मदिन, 15 अक्तूबर पर विशेष

विज़न-2020

आत्मनिर्भर भारत के पक्षधर रहे डॉ. कलाम

कृष्ण कुमार मिश्र



15 अक्तूबर भारत के महान स्वप्नदर्शी, ए.पी.जे. कलाम का जन्मदिन है। यह अवसर उनके कार्यों, मूल्यों तथा आदर्शों को याद करने का है। आज कोरोना के वैश्विक संकट के दौर में जब प्रधानमंत्री जी ने 'आत्मनिर्भर भारत' का मंत्र दिया है, ऐसे हालात में डॉ. कलाम का स्मरण स्वाभाविक है। वास्तव में डॉ. कलाम हमेशा से विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में राष्ट्र की आत्मनिर्भरता के हिमायती थे। वर्ष 2020 इसलिए और भी प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि देश की चतुर्दिक उन्नति तथा खुशहाली के लिए उनका दिया हुआ दृष्टिपत्र, विज्ञन-2020 (Vision-2020), सन् 2020 को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया था। दरअसल 1998 में डॉ. कलाम ने डॉ. वाई. एस. राजन

के साथ मिलकर एक पुस्तक लिखी थी जिसका शीर्षक था 'ईंडिया 2020 - ए विज़न फॉर दि न्यू मिलेनियम'। इस पुस्तक में देश की मौजूदा क्षमताओं, आवश्यकताओं, के साथ-साथ भविष्य की अपेक्षाओं का आकलन दिया गया था। इसके साथ ही भारत को सन् 2020 तक विश्व मानचित्र पर एक सशक्त, सामर्थ्यवान, आत्मनिर्भर देश बनाने का रोडमैप दिया गया था। इसे प्रायः 'विज़न-2020' के नाम से जाना जाता है।

दूरदृष्टि

डॉ. कलाम के विज़न 2020 में देश को कृषि, उद्योगधंधों से लेकर सेवा क्षेत्रों में मजबूत बनाने की बात कही गयी है। उनका मानना था कि राष्ट्र को स्वास्थ्य, पोषण, चिकित्सा, संचार, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि, यातायात, पर्यावरण,

उद्योगधंधे, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष विज्ञान, सभी क्षेत्रों में एक साथ मिलकर काम करना होगा तथा वर्ष 2020 का भारत विश्व पटल पर एक नये भारत के रूप में स्थापित होगा। वह भारत जो ज्ञान संपन्न होगा, जिसके नागरिकों में तकनीकी कौशल होगा, विज्ञान के क्षेत्र में नवीन विंतन होगा, तथा प्रौद्योगिकी में वह नित नवाचारों से सुप्तन्न होगा। ऐसा भारत दुनिया को फिर से नेतृत्व देगा, सुख-शांति का संदेश देगा, दूसरों की मदद करने की स्थिति में होगा। वर्ष 1998 में इस लेखक को मुंबई में डॉ. कलाम को इस दृष्टिपत्र पर आधारित तकनीकी प्रस्तुति को विस्तार से प्रत्यक्ष तौर पर जानने-सुनने का सुअवसर मिला था।

कोटि-कोटि जनों के आदर्श

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का पूरा नाम था डॉ. अवुर पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम। उन्हें विज्ञान जगत में कलाम साहब के नाम से जाना जाता है। वे देश के सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न से विभूषित वैज्ञानिक के साथ-साथ भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें राष्ट्रपति रहे। इन्हें भारत का 'मिसाइलमैन' कहा जाता है। वे भारत के मिसाइल कार्यक्रम के जनक थे। उनके द्वारा सफलतापूर्वक विकसित अग्नि और पृथ्वी जैसी बैलिस्टिक मिसाइलों ने देश को सुरक्षित करने में महती भूमिका निभायी है। उनकी जीवनगाथा किसी रोचक उपन्यास के नायक की कहानी से कम नहीं है। अद्भुत प्रतिभा के धनी डॉ. कलाम का व्यक्तित्व इतना उन्नत था कि वे सभी धर्म, जाति एवं सम्प्रदायों के व्यक्ति नज़र आते थे। वे एक ऐसे सर्वस्वीकार्य भारतीय थे जो सभी के लिए 'एक आदर्श' बन गये थे। विज्ञान के पथ पर चले एक सामान्य राही का इस देश के राष्ट्रपति पद तक पहुंचने का सफर बेहद रोचक तथा प्रेरणादायी है।

डॉ. कलाम के बारे में वैसे तो बहुत कुछ लिखा जा चुका है। वेशभूषा, बोलचाल के लहजे, अच्छे-खासे सरकारी आवास को छोड़कर हॉस्टल में नियमबद्ध जीवन से झलकती उनकी सरलता उनके संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर एक सम्मोहक प्रभाव छोड़ती थी। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, देश के विकास और युवा मस्तिष्कों को प्रज्वलित करने में अपनी निमग्नता के अतिरिक्त वह पर्यावरण की चिंता भी खूब करते थे। साहित्य में वे गहन रुचि रखते थे।

वे कविता लिखते थे, वीणा बजाते थे, और अध्यात्म से गहरे जुड़े थे। डॉ. कलाम में अपने काम के प्रति अदृष्ट लगन थी। उनके लिए हर समय काम का समय होता था। वह अपना अधिकांश समय कार्यालय में बिताते थे। डॉ. कलाम में गजब की ऊर्जा तथा फुर्ती थी। ऊर्जा का ऐसा प्रवाह केवल गहरी प्रतिबद्धता तथा समर्पण से ही आ सकता है। डॉ. कलाम शाकाहारी व्यक्ति थे। उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी अनुकरणीय है। डॉ. कलाम की स्मरण-शक्ति भी लाजवाब थी। कोई घटना उन्हें कालान्तर में भी लंबे समय तक याद रहती थी।

डॉ. कलाम बड़े ही विनोदप्रिय स्वभाव के थे। डॉ. कलाम सभी मुद्दों को मानवीयता की कसौटी पर परखते थे। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें बहुत सफल रही हैं। वह अपनी रॉयलटी का अधिकांश हिस्सा स्वयंसेवी संस्थानों को दान दे देते थे। भारतीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में उनके योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कार दिए गए थे। इनमें से कुछ पुरस्कारों के साथ कुछ नकद राशि भी थी। वह इन पुरस्कार राशियों को परोपकार के कार्यों के लिए अलग रखते थे। जब-जब देश में प्राकृतिक आपदाएँ आईं, तब-तब डॉ. कलाम की मानवीयता एवं करुणा सामने आई। वह प्रभावित लोगों को राहत पहुँचाने के लिए डी.आर.डी.ओ. के अधिकार क्षेत्र में मौजूद सभी संसाधन एकत्र करते थे। उनके व्यक्तित्व का एक अन्य दिलचस्प पहलू यह था कि वह खुद से मिलने आने वालों के साथ बहुत आदर से पेश आते थे।

शुरुआती जीवन एवं शिक्षा

डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता जैनुलाबदीन की कोई बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी, और न ही वे कोई बहुत अमीर इंसान थे। इसके बावजूद वे बुद्धिमान थे और उनमें उदारता की सच्ची भावना थी। वे लोग अपने पुश्टैनी घर में रहते थे, जो कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य बना था तथा रामेश्वरम् के प्रसिद्ध शिवमंदिर से महज दस मिनट की दूरी पर स्थित मस्जिदवाली गली में था। इनके पिताजी एक स्थानीय ठेकेदार अहमद जलालुद्दीन के साथ मिलकर लकड़ी की नौकाएँ बनाने का काम करते थे, जो तीर्थयात्रियों को रामेश्वरम् से धनुषकोड़ि ले जाती थीं।

इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रामेश्वरम् के



रामनाथपुरम् के हाईस्कूल का दृश्य

प्राइमरी स्कूल से प्राप्त की। इसके बाद आगे स्कूली शिक्षा इन्होंने रामनाथपुरम् के हाईस्कूल से प्राप्त की। सन् 1950 में तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में बी.एस.सी. में दाखिला लिया। बी.एस.सी. पूरा करने के बाद इन्होंने यह महसूस किया कि भौतिकी उनका विषय नहीं है। इन्हें अपना सपना पूरा करने के लिए इंजीनियरिंग में जाना चाहिए। फिर इन्होंने तकनीकी शिक्षा के लिए मशहूर मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.आई.टी.) में दाखिला ले लिया। एम.आई.टी. में उड़ान संबंधी मर्शिनों की विभिन्न कार्यप्रणालियों को समझाने के लिए प्रदर्शन के तौर पर रखे गए दो विमानों ने इन्हें काफी आकर्षित किया। इन्होंने पहला साल पूरा करने के बाद वैमानिकी (एयरोनॉटिकल) इंजीनियरिंग को अपने विशेष विषय के रूप में चुना। स्नातक के बाद वे एम.आई.टी. से एक प्रशिक्षु के रूप में हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एच.ए.एल.), बंगलौर चले गए। वहाँ इन्होंने एक टीम के सदस्य के रूप में इन्जीनियरिंग मार्ग शुरू करने के लिए इन्हें तीन साल का वक्त दिया गया। भगवान् शिव के बाहन के प्रतीक रूप में इस होवरक्राफ्ट को 'नंदी' नाम दिया गया।

इसके उपरान्त इन्हें इंडियन कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च की ओर से साक्षात्कार के लिए बुलावा आया। उनका साक्षात्कार डॉ. विक्रम साराभाई ने लिया। इस साक्षात्कार के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति में रॉकेट इंजीनियर के पद में इन्हें चयनित किया गया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति में इनका काम टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR), मुंबई के कंप्यूटर केंद्र में कंप्यूटर प्रशिक्षक के रूप में शुरू हुआ। सन् 1962 के मध्य में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति ने केरल में त्रिवेंद्रम के पास थुंबा गाँव में रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र स्थापित करने का फैसला किया। थुंबा को इस केंद्र के लिए सबसे उपयुक्त स्थान के रूप में चुना गया था, क्योंकि यह स्थान पृथ्वी के चुंबकीय अक्ष के सबसे करीब था। उसके बाद शीघ्र ही डॉ. कलाम को रॉकेट प्रक्षेपण की तकनीकियों का प्रशिक्षण



प्रो. सतीश धवन और डॉ. कलाम तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को एस.एल.वी.-३ के परिणामों की जानकारी देते हुए



राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेहड़ी से 'पद्म भूषण' ग्रहण करते हुए

लेने के लिए अमरीका में नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) भेजा गया। यह प्रशिक्षण छह महीने का था। जैसे ही डॉ. कलाम नासा से लौटे, 21 नवंबर, 1963 को भारत का 'नाइक अपाचे' नाम का पहला रॉकेट छोड़ा गया। यह साउडिंग रॉकेट नासा में ही बना था। डॉ. साराभाई ने राटो परियोजना के लिए डॉ. कलाम को प्रोजेक्ट लीडर नियुक्त किया। डॉ. कलाम ने विशेष वित्तीय शक्तियाँ हासिल कीं, प्रणाली विकसित की, तथा 8 अक्टूबर 1972 को उत्तर प्रदेश में बरेली एयरफोर्स स्टेशन पर इस प्रणाली का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया।

रॉकेट की उड़ान

रॉकेटों के विकास का अगला बड़ा अवसर तब आया, जब डॉ. कलाम को सैटेलाइट लांच व्हीकल (एस.एल.वी.) परियोजना के लिए प्रोजेक्ट मैनेजर नियुक्त किया गया। एस.एल.वी.-३ परियोजना का मुख्य उद्देश्य एक भरोसेमंद लांच व्हीकल विकसित करना था, जो चालीस किलोग्राम सैटेलाइट को धरती से चार सौ किलोमीटर ऊंचाई पर कक्षा में स्थापित करता। यह एक बड़ा महत्वपूर्ण काम था। इसमें यान के चार चरणों के लिए एक रॉकेट मोटर सिस्टम का विकास करना था। हाई एनर्जी प्रोपेलेंट्स के इस्तेमाल में सक्षम रॉकेट मोटर सिस्टम में इस्तेमाल के लिए 8.5 टन प्रोपेलेट ग्रेन निर्मित किया जाना था। एक अन्य कार्य था नियंत्रण तथा मार्गदर्शन। यह एक बड़ी परियोजना थी जिसमें दो सौ पचास उपभाग और चालीस बड़ी उपप्रणालियाँ शामिल थीं। 18 जुलाई, 1980 को सुबह आठ बजकर तीन मिनट पर श्रीहरिकोटा रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र से एस.एल.वी.-३ ने उड़ान भरी। इस परियोजना की सफलता ने डॉ. कलाम को राष्ट्रीय पहचान दी। उन्हें इस उपलब्धि के

लिए भारत सरकार द्वारा 26 जनवरी 1981 को 'पद्म भूषण' सम्मान से सम्मानित किया गया। इसी एस.एल.वी. की बुनियाद पर बाद में चलकर समुन्नत आग्मेण्टेड सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (ए.एस.एल.वी.), तथा पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (पी.एस.एल.वी.) रॉकेटों का विकास हुआ।

मिसाइलमैन बनने की ओर

रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डी.आर.डी.एल) में उनकी टीम की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बावजूद मिसाइल कार्यक्रम धीमा था। सैन्य रॉकेटों के सारे कार्यक्रमों में शिथिलता आ गई थी। डी.आर.डी.ओ. में किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी जो मिसाइल कार्यक्रम का नेतृत्व कर सके। प्रो. रामन्ना ने डॉ. कलाम के सामने निर्देशित मिसाइल कार्यक्रम को आकार देने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेने का प्रस्ताव रखा। प्रो. रामन्ना के इस प्रस्ताव ने डॉ. कलाम के भीतर भावनाएँ जगा दीं। फरवरी 1982 में डॉ. कलाम को डी.आर.डी.एल का निदेशक नियुक्त करने का फैसला लिया गया और 1 जून 1982 को डॉ. कलाम ने डी.आर.डी.एल के निदेशक का पद संभाला। डॉ. कलाम ने रक्षामंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. वी. एस. अरुणाचलम के मार्गदर्शन में इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम (आई.जी.एम.डी.पी.) का प्रस्ताव तैयार किया। स्वदेशी मिसाइलों के उत्पादन के लिए एक स्पष्ट और सुपरिभाषित मिसाइल कार्यक्रम तैयार करने के उद्देश्य से डॉ. कलाम की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई।

इस परियोजना के प्रथम चरण में एक नीची ऊँचाई पर तुरंत मार करने वाली टैक्सिकल कोर व्हीकल मिसाइल और जमीन से जमीन पर मध्यम दूरी तक मार करने वाली मिसाइल के विकास

एवं उत्पादन था। दूसरे चरण में जमीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल, तीसरी पीढ़ी की टैक भेदी निर्देशित मिसाइल और डॉ. कलाम के सपने री-एंट्री एक्सपरिमेंट लांच व्हीकल (रेक्स) का प्रस्ताव रखा गया था। जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल प्रणाली को 'पृथ्वी' और टैक्सिकल कोर व्हीकल मिसाइल को 'त्रिशूल' नाम दिया गया। जमीन से हवा में मार करने वाली रक्षा प्रणाली को 'आकाश' और टैक्सोधी मिसाइल परियोजना को 'नाग' नाम दिया गया। डॉ. कलाम ने अपने मन में सँजोए रेक्स के बहुप्रतीक्षित सपने को 'अग्नि' नाम दिया। 27 जुलाई, 1983 को आई.जी.एम.डी.पी. की औपचारिक रूप से शुरुआत की गई। मिसाइल कार्यक्रम का पहला प्रक्षेपण 16 सितंबर, 1985 को किया गया। इस दिन श्रीहरिकोटा स्थित परीक्षण रेंज से 'त्रिशूल' को छोड़ा गया। यह एक तेज प्रतिक्रिया प्रणाली है, जिसे नीची उड़ान भरने वाले विमानों, हेलीकॉप्टरों तथा विमान-भेदी मिसाइलों के खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता है। 25 फरवरी, 1988 को दिन में ग्यारह बजकर तेर्हीस मिनट पर 'पृथ्वी' को छोड़ा गया। यह देश में रॉकेट विज्ञान के इतिहास में एक युगांतकारी घटना थी। यह एक सौ पचास किलोमीटर तक एक हजार किलोग्राम पारंपरिक युद्ध विस्फोटक सामग्री ले जाने की क्षमता से युक्त जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल है। 22 मई, 1989 को 'अग्नि' परियोजना किया गया। यह लंबी दूरी के फ्लाइट व्हीकल्स के लिए एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शक है। साथ ही 'आकाश' पचास किलोमीटर की अधिकतम अंतर्रेधी रेंजवाली मध्यम की वायु-रक्षा प्रणाली है। उसी प्रकार 'नाग' टैक भेदी मिसाइल है, जिसमें 'दागो और भूल जाओ' तथा ऊपर से आक्रमण करने की

क्षमताएँ हैं। जब एक रुसी कंपनी एन.पी.ओ. मशीनोस्ट्रोइनिया ने एक विमान-भेदी पराध्वनिक क्रूज मिसाइल विकसित करने के लिए डी.आर.डी.ओ. के साथ संयुक्त रूप से कार्य करने का प्रस्ताव रखा तो डॉ. कलाम ने सरकार को इस प्रस्ताव को स्वीकार करने तथा संयुक्त प्रयास में निवेश करने के लिए प्रेरित किया। फरवरी 1998 में भारत और रूस के बीच समझौते के अनुसार भारत में ब्रह्मोस प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की गई। 'ब्रह्मोस' एक पराध्वनिक क्रूज मिसाइल है, जो धरती, समुद्र, उपसागर तथा वायु आधारित विभिन्न माध्यमों से प्रक्षेपित किए जाने में सक्षम है।

ऐतिहासिक क्षण, शक्तिमय परीक्षण

11 मई 1998 भारत के इतिहास में स्वर्णक्षरों में अंकित हो गया जब उस दिन अपराह्न देश ने राजस्थान के पोखरण में एक साथ तीन परमाणु परीक्षण किए। ये परीक्षण कोडनेम "ऑपरेशन शक्ति" के अंतर्गत किए गए थे। ये तीनों परमाणु युक्तियाँ तीन अलग-अलग तरह की थीं। उनमें से एक परमाणु बम था, एक छोटी युक्ति (सब-क्रिटिकल) थी, तथा तीसरा हाइड्रोजन बम था। उन विस्फोटों के बाद देश ने खुद को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र घोषित किया। इसके दो दिन बाद 13 मई को दो और परमाणु युक्तियों का सफलतापूर्वक परीक्षण सपन्न किया गया। इस तरह दो दिनों में भारत ने कुल 5 परमाणु परीक्षण किए। देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने स्वयं एक संक्षिप्त प्रेस कॉन्फ्रेंस करके भारत के परमाणु परीक्षणों की जानकारी दी थी। वे वैज्ञानिकों के दल के साथ पोखरण रेंज स्थित परीक्षण स्थल पर गये थे। यह हमारे देश की तकनीकी क्षमता का प्रदर्शन था। उनमें जटिल स्तर के कौशलों की जरूरत होती है। परमाणु युक्तियों में भौतिकी, रसायन, इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर साइंस से लेकर कई अन्य विधाएँ शामिल होती हैं।



राष्ट्रपति डॉ. के. आर. नारायण से 'भारत रत्न' ग्रहण करते हुए डॉ. कलाम

इसीलिए भारत सरकार ने 11 मई को 'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इन परीक्षणों की योजना से लेकर उन्हें सफलतापूर्वक संपन्न करने में डॉ. कलाम की अग्रणी भूमिका थी।

कार्य का सम्मान

वर्ष 1990 के गणतंत्र दिवस पर राष्ट्र ने अपने मिसाइल कार्यक्रम की सफलता पर खुशी मनाई। डॉ. कलाम और डॉ. अरुणाचलम को 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया। अक्टूबर, 1992 से दिसंबर 1999 तक रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन के सचिव और डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डी.आर.डी.ओ.) के महानिदेशक के रूप में डॉ. कलाम को अनुसंधान व विकास में सभी प्रयोगशालाओं का मार्गदर्शन करने और फलदायी संबायतावाली परियोजनाओं की प्रगति पर निगरानी रखने का संपूर्ण दायित्व प्राप्त हुआ। उन्हें सन् 1997 में 'भारत-रत्न' की उपाधि प्रदान की गई।

सर्वोच्च पद को भी सुशोभित किया

राष्ट्रपति पद के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवार के रूप में नामांकित किए जाने का सभी ने स्वागत किया तथा 18 जुलाई, 2002 को डॉ. कलाम को नव्वे प्रतिशत मतों द्वारा 'भारत का ग्यारहवां राष्ट्रपति' चुना गया।



उन्हें 25 जुलाई 2002 को संसद भवन के अशोक हॉल में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। इस समारोह में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीण उपस्थित थे। राष्ट्रपति के रूप में इनका कार्यकाल 25 जुलाई 2007 तक था। डॉ. कलाम के बारे में कहा जाता है कि वे आम जन के राष्ट्रपति थे। प्रोटोकॉल के औपचारिक तामസाम से वे खुद को जरा दूर ही रखते थे। राष्ट्रपति भवन की कई पुरानी परिपाठियों को उन्होंने बदल दिया। बच्चों से उन्हें विशेष स्नेह था। राष्ट्रपति के रूप में अपने कार्यकाल में वे करीब एक लाख बच्चों से सीधे झब्ब हुए थे। बच्चों के कार्यक्रमों में शिरकत करने में उन्हें बड़ी खुशी होती थी। डॉ. कलाम ने 'Wings of Fire', 'India 2020: A vision for the Millennium', 'Ignited Minds' जैसी कई सुप्रसिद्ध किताबें लिखी हैं। डॉ. कलाम को अनेक पुरस्कार मिले, जिनमें इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स का नेशनल डिजाइन अवॉर्ड (1980); एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया का डॉ. बिरेन रॉय स्पेस अवॉर्ड (1986); एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा सन् 1994 के लिए आर्यभट्ट पुरस्कार (1996); विज्ञान के लिए जी.एम. मोदी पुरस्कार (1996); राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार (1997), शामिल हैं।

असामयिक अवसान

27 जुलाई 2015 को शिलांग में सायंकाल डॉ. कलाम का आकस्मिक निधन हो गया। वे भारतीय प्रबन्ध संस्थान, शिलांग में व्याख्यान दे रहे थे। तभी उन्हें तेज हार्ट अटैक आया, और तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें बचाया न जा सका। वे जीवन भर सकिय रहे। सही मायनों में वे कर्मयोगी थे। अपने जीवन के हर पल का उन्होंने देश और समाज के हित में उपयोग किया। अतिम समय में भी वे लोगों को संबोधित तथा प्रेरित करते हुए ही इस दुनिया से विदा हुए। उनके जीवन की सादगी बेमिसाल थी। उनके आदर्श, जीवन मूल्य तथा कार्य आने वाली पीढ़ियों को निरंतर प्रेरणा देते रहेंगे।

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र
असोशिएट प्रोफेसर
होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र
टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान
मुंबई 400 088
[ईमेल: vigyan.lekhak@gmail.com]